Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 1, Issue – 2015

नवगीतकार श्री कृष्ण तिवारी की कविताओं में बिम्ब एवं प्रकृति विधान

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी*

श्री कृष्ण तिवारी नवगीतकारों में प्रथम पंक्ति के गीतकार थे उनके, गीत संग्रह 'सन्नाटे की झील' के गीतों में बिम्ब का प्रयोग दो रूपों में हुआ है। प्रथमतः पूरा गीत अपने सम्पूर्णता में एक बिम्ब विशेष का निर्माण करता है तो द्वितीयतः कई एक गीतों में गीत प्रवाह के विभिन्न बिन्दुओं पर अलग–अलग बिम्ब खींचकर गीतकार ने अपने बिम्ब धर्मिता का परिचय दिया है।

डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी ने कहा है कि यथार्थ अनुभव को उसकी सम्पूर्णता और गतिमयता में पकड़ने के शब्द अनुभव को जड़ और निःशेष कर देता है, पर बिम्ब अनुभव को न केवल उसकी वर्तमान स्थिति में वरन् उसकी सम्भावनाओं में भी उसकी पूरी जटिलता और सूक्ष्मता के साथ अंकित करता है।[1] डॉ0 सत्येन्द्र शर्मा ने कहा है कि "नवगीत में वस्तु सन्दर्भ को चाक्षुष गतिमान, संवेद बनाने के लिए पूरी रचना में बिम्ब परिवर्तन नहीं होता। यह कहा जा सकता है कि बिम्ब की पकड़ काव्य और रचनाकार के अनुभूति ऐक्य की पहचान है।"[2]

श्रीकृष्ण तिवारी के द्वारा विभिन्न बिम्ब उनकी बहुधर्मी संवेदनाओं के सहज सहायक प्रतीक होता है। किसी भी बिम्ब का यह प्राथमिक कर्तव्य होता है कि वह अर्थ की स्पष्टता के साथ भावों का उत्तेजनात्मक संप्रेषण करें। तिवारी जी का एक गीत है 'कालचक्र'।

भीलों ने बाँट लिये वन।

राजा को खबर नहीं।।

उल्टे मुँह हवा हो गयी

मरा हुआ साँप जी गया,

सूख गये ताल–पोखरे

बादल को सूर्य पी गया।

पानी बिन मर गये हिरन।

राजा को खबर नहीं।।[3]

तिवारी जी का यह गीत अपनी सम्पूर्णता में राजनीतिक विसंगति का एक चमत्कारी बिम्ब प्रस्तुत करता है जिसमें अन्य मानस एवं ऐन्द्रिय बिम्बों के माध्यम से गीतकार ने गीत में चमत्कार पैदा करता है जो यथा स्थान प्रयुक्त होकर गीत में सौन्दर्य वृद्धि करते हैं जैसे–'भीलों द्वारा वन बाँटना', 'रानी का बदचलन होना', 'हवा का उल्टे मुँह होना', 'मरे साँप का जीना', छत्र–मुकुट को चोर का ले जाना' आदि बिम्बात्मक स्थितियाँ न सिर्फ संवेदना को समर्थ रूप में प्रकट करती है बल्कि गीत के विस्तार क्रम में वह सौन्दर्य की सृष्टि करते हैं।[4]

इसी प्रकार तिवारी जी के कुछ गीतों के अंश का उद्धरण प्रस्तुत है–

रिश्तों के जाल में फँसा

कोई सन्दर्भ तड़फड़ा रहा,

पालतू कबूतर–सा सन्नाटा

रह–रहकर पंख फड़फड़ा रहा।

बस्ती के बाहर बसवारी में

*एसो0प्रो0–हिन्दी विभाग, डी0ए0वी0 कालेज, लखनऊ।
E-mail Id: srivastava.sadhana1@gmail.com

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

स्कूली लड़कों–सी सीटियाँ बजाती हैं।

ठाकुर की बाड़ी में फूलों पर

ऊँघ रही तितलियाँ उड़ाती हैं।

हर घर के दर्पण को

आँख मार आती है

फागुनी हवा।"[5]

रोशनी के मोड़ पर कुछ क्षण ठहर।

पी रहा हूँ मैं अँधेरे का जहर।।

मारकर पत्थर किसी तालाब को।

गिन रहा हूँ दर्द की उठती लहर।।"[6]

भेड़िए की तरह गुर्राता

अँधे–साँप–सा फुफकारता पानी

कुछ नहीं सुनता

आखिरी साँस तक नाचता है

वह सिर्फ नाचता है।"[7]

तिवारी जी के इन गीत के अंशों को देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि तिवारी जी ने बड़ी सहजता से बिंबों को अपने मनोभावों के अनुरूप बनाया है, बिम्ब में लोक पटल की छवि दिखाते हैं, देशज ऐतिहासिक एवं पौराणिक प्रतीकों के माध्यम से बिम्ब निर्मित कर अपने गीतों में चमत्कार भर देते हैं। यह अकेलापन गीत में 'जंगल की नदी' सा तन्हा एवं निर्जन में विद्यमान प्राकृतिक बिम्ब के माध्यम से गीतकार ने अकेलेपन की भयावहता का चित्र प्रस्तुत किया है। 'पानी के नाच' गीत में गीतकार पानी का मानवीकरण कर उसे नचाता है, वह भेड़िये की तरह गुर्राता है साँप की तरह फुफकारता है। 'फागुनी हवा' गीत में फागुन की हवा का गीतकार बड़ा ही शरारती एवं मनोहारी चित्र उपस्थित किया है। उससे (हवा से) सीटी बजवाता है तितलियाँ उड़वाता है। इसी प्रकार से श्रीकृष्ण तिवारी अपने अनेक गीतों में अपने संवेदनाओं को सूंघने के उद्देश्य से विभिन्न बिम्बों का सहारा लेकर अपने गीतो को सजीव और चमत्कारिक प्रस्तुति की है।

डॉ0 भागीरथ मिश्र ने प्रतीकों के बारे में लिखा है–''अपने रूप, गुण, कार्य या विशेषताओं के सादृश्य एवं प्रत्यक्षता के कारण जब कोई वस्तु या कार्य किसी अप्रस्तुत वस्तु, भाव, विचार, क्रियाकलाप, देश, जाति, संस्कृति आदि का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रकट किया जाता है तब वह प्रतीक कहलाता है। यह प्रतीक–पद्धति सामान्य जीवन और व्यापक व्यवहार–क्षेत्र में भी प्रयुक्त होती है। राष्ट्रीय या धार्मिक झण्डा, सिक्का, लिपि, वृक्ष, फल, व्यक्ति आदि प्रतीक अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। उदाहरणार्थ, तिरंगा झण्डा भारतीय राष्ट्र का रूपया भारतीय सिक्के का वटवृक्ष विद्या का, कमल भारतीय संस्कृति का तथा नागरी भारतीय लिपि का प्रतीक है। इसी प्रकार जयचन्द देशद्रोही का, शिवाजी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी का, कालिदान कवि का, मीरा भक्त का, बृहस्पति ज्ञान का और गांधी शान्ति का प्रतीक है। यह प्रतीक–पद्धति सभी देशों और सभी कालों में प्रचलित रही है और किसी भी देश और काल के लिए नयी नहीं है, परन्तु यूरोपीय प्रतीकवाद 19वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में वहाँ की कला एवं साहित्य के अन्तर्गत एक विशिष्ट प्रवृत्ति के रूप में प्रकट हुआ। यह स्वयं प्रतिक्रिया–स्वरूप आया और इसकी भी प्रतिक्रिया हुई''।[8]

प्रतीक और बिम्ब दोनों गीत संरचना के विधायक तत्व हैं। दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं परन्तु दोनों में भेद भी है। बिम्ब में किसी विषय वस्तु का एक निश्चित स्वरूप बोध होता है किन्तु प्रतीक में सदैव अनिश्चित स्थिति की प्रधानता रहती है। हालांकि कुछ विद्वानों ने अनिश्चितता की जगह

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

वास्तविकता का अन्तर बताया है। इन मतभेदों से हटकर अगर देखें तो स्पष्ट होता है कि प्रतीक केवल इशारा भर करते हैं। बिम्ब ही उसे ग्राह्य बनाता है। अतः यह अन्तर चरणगत है न कि तत्वगत।

श्री कृष्ण तिवारी जी के गीत संग्रह 'सन्नाटे की झील' में प्रत्येक गीत ने तरह–तरह के प्रतीकों के सहारे सौन्दर्य की सृष्टि की है। डॉ0 भागीरथ मिश्र के प्रतीकों के विभाजन को आधार मानकर यदि तिवारी जी के गीतों में प्रतीक ढूँढे जांय तो सहज ही तिवारी जी द्वारा प्रयुक्त प्रतीक को हम जान सकते हैं।

''रोज जहर पीना है

सर्प दंश सहना है

मुझको जीवन भर

चन्दन ही रहना है।[9]

यहाँ पर 'जहर पीना' और 'सर्पदंश सहना' अन्यायपूर्ण स्थिति का प्रतीक है। परन्तु चन्दन ही बने रहना एक निष्ठता का प्रतीक है सद्चरित्रता का प्रतीक है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण हैं–

''पीठ छूते छुरे–सा

यह वक्त

कितना क्रूर कितना सख्त।

इस शहर से उस शहर तक

जख्म की बहती हुई

नीली नदी

हर सुबह उगता हुआ

बीमार सूरज''।[10]

इस गीत में तिवारी जी ने विषादमय और करुणामय प्रतीकों के सहारे विसंगति का चित्रण किया है। नीली नदी और बीमार सूरज प्रतीक बड़े ही मर्मस्पर्शी हैं। एक अन्य प्रतीक देखें–

''सूरज को कहीं उगा दूँ

चाँद कहीं बो आऊँ मैं,

चाहे मैं आग पर चलूँ

पानी पर सो जाऊँ मैं''।[11]

सांस्कृतिक प्रतीकों को यदि तिवारी जी के गीत–संग्रह 'सन्नाटे की झील' में ढूँढा जाय तो इसके तीन रूप मिलते हैं–

1. संस्कार सम्बन्धी
2. पौराणिक
3. आध्यात्मिक

''दूब लगी उगने मौसम के हाथ पर

झूठ रौंदने लगा सत्य को हर कहीं।

पाप नाचने लगा पुण्य के माथ पर;

गर्द–खोर हो गये आइने इस कदर

छवि धूमिल हो गयी आज हर रूप की''।[12]

इस गीत में दूब का मौसम के हाथ पर उगना, झूठ द्वारा सत्य को रौंदना, पाप का पुण्य के माथे पर नाचना, आइने को गर्द–खोर होना जैसे सभी प्रतीक अपने संस्कार एवं प्रकृति के विपरीत स्थितियों के सूचक हैं।

पौराणिक प्रतीकों को यदि तिवारी जी की कविता में देखा जाय तो ये इनके अनेक रूप अनेक गीतों में मिलते हैं। जैसे–

''गर्म तवे पर कच्ची रोटी की तरह

पिटे वक्त के हाथ लोक सिकने लगे,

कंस और रावण की सुविधा के लिए

राम और कृष्ण के चेहरे तक बिकने लगे''।

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

यह विसंगति का ऐसा प्रतीक है जिसमें गीतकार ने सफेदपोश लोगों के प्रतीक से सामाजिक दशा का चित्रण किया है।

ऐतिहासिक प्रतीकों को यदि तिवारी जी के गीत–संग्रह में देखा जाय तो एक उदाहरण प्रस्तुत है–

''आओ मैं जूड़े में टाँक दूँ

एक फूल मौसमी गुलाब का,

मँहके यह सारी रात और सारा वातावरण।

ओ मेरे ख्यालों की उर्वशी,

ओ मेरे यादों की मेनका''।[13]

इसमें उर्वशी और मेनका तिवारी जी के ऐतिहासिक प्रतीक हैं।

जीवन व्यापार–सम्बन्धी प्रतीकों को यदि श्रीकृष्ण तिवारी के गीतों में ढूँढा जाय तो इसके प्रयोग का बहुतायत है। इनके गीतों में जैसे–

'इन्द्र–धनुष से उगे हुए

द्वार–द्वार पर पड़े दिखे

शब्द–शब्द में सगुन भरे,

किरण–पत्र भोर के लिखे।

दर्द से भरा हुआ

मन मेरा अनमना

आज फिर बुहार गयी तुम''।[14]

इस गीत में प्रिय के दुःखी मन का प्रिया द्वारा शमन करने का सौन्दर्यमुखी प्रतीक गीतकार ने रचा है।

''खून, रहजनी बलात्कार के खिलाफ

हिजड़ों का निकला है नगर में जुलूस,

चलो चलें देख आयें।

खुलेआम जुल्म,

अनाचार के खिलाफ

गूँगों का निकला है जुलूस,

चलो चलें देख आयें''।[15]

यह गीत जीवन–जगत की विडम्बनापूर्ण स्थितियों का चित्रण करता हुआ है। कवि का जुलूस रूपी प्रतीक। अन्यत्र देखें,

''ऐसी उल्टी हवा बह रही आजकल,

हँसी उड़ाती–फिरती चलनी सूप की।

पत्थर भी अब पानी में तिरने लगा''।[16]

इस गीत में सामाजिक दशा को गीतकार ने चलनी और सूप जैसे जो लेकर के लोक पक्षधरता का सूचक है।

श्रीकृष्ण तिवारी जी के पूरे गीत संग्रह को देखने पर प्रतीत होता है कि तिवारी जी ने झील, पानी, दर्पण, आइना, सर्प, हवा, पानी, काँच, रेत, दूब, अक्षत, राम, रावण, कंस, कृष्ण, मेनका, उर्वशी, अभिमन्यु, इन्द्र–धनुष, शंख, बाँसुरी मौसमी, गुलाब, शीशा आदि लोक सन्दर्भित एवं चिर–परिचित, प्रतीकों का प्रयोग किया है जो नये तो नहीं हैं परन्तु अपने प्रयोग में नूतन अर्थ सृष्टि करके गीतकार की क्षमता का परिचय देते हैं।

संदर्भ

[1]. डॉ0 सत्येन्द्र शर्माः नवनीत संवेदना और शिल्प, पृष्ठ 161.
[2]. श्रीकृष्ण तिवारीः सन्नाटे की झील, पृष्ठ 1.
[3]. श्रीकृष्ण तिवारीः सन्नाटे की झील, पृष्ठ 5.
[4]. वही, पृष्ठ 14.
[5]. वही, पृष्ठ 20.
[6]. वही, पृष्ठ 27.
[7]. श्रीकृष्ण तिवारीः सन्नाटे की झील, पृष्ठ 43.

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

[8]. वही, पृष्ठ 32.
[9]. वही, पृष्ठ 21.
[10]. भागीरथ मिश्रः भारतीय काव्यशास्त्र, पृष्ठ 271.
[11]. श्रीकृष्ण तिवारीः सन्नाटे की झील, पृष्ठ 45.
[12]. वही, पृष्ठ 36.
[13]. वही, पृष्ठ 42.
[14]. श्रीकृष्ण तिवारीः सन्नाटे की झील, पृष्ठ 48.
[15]. वही, पृष्ठ 48.

© Eureka Journals 2015. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501